कलम और क्रांति के पुरोधाः गणेश शंकर विद्यार्थी

20

ओम शरण
शोधार्थी
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड
विश्वविद्यालय, बरेली, (उ0प्र0)

प्रो0 (डॉ.) सीमा अग्रवाल
शोध निर्देशिका (हिन्दी विभागाध्यक्ष)
गोकुलदास हिंदू गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
मुरादाबाद, (उ0प्र0)

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है, समाज में जब–जब अत्याचारों, कुरीतियों, अन्यायों का बोलबाला हुआ तब तब भारत मां के शिखर पुरुषों ने अपने अमर बलिदानों को प्रस्तुत कर समाज को अत्याचारों के प्रकोप से बचाया। गणेश शंकर विद्यार्थी जी ऐसे ही अमर क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अपनी कलम की क्रांति से ऐसी ज्वाला प्रस्फुटित की जिसके ''प्रताप'' से ब्रिटिष हुक्मरानों के सिंहासन की चूरें डगमगा गई। देसी रियासतों के अत्याचारों का ऐसा यथार्थ वर्णन किया कि देशी रियासतों के तालुकेदारों के मन में ''प्रतापी'' संपादक के ''प्रताप'' का भय घर कर गया। विद्यार्थी जी ''अहिंसा परमो धर्मः'' ध्येय वाक्य में श्रद्धा रखते हुए भी आवश्यकता अनुसार क्रांति का उद्घोष भी करते रहे। अपने निडर अक्खड़ स्वभाव के कारण उन्हें कई बार जेल की यात्राएं करनी पड़ी। क्रांति व क्रांतिकारियों का संरक्षक ''प्रताप'' अन्यायी शासकों के अन्यायी घरों में दुख व आर्थिक दुश्वारियों को झेलता रहा किंतु अपने उद्देश्यों से पीछे न हटा। प्रस्तुत आलेख में हम उनकी कलम की निर्भीकता एवं क्रांति की दग्धता का परिचय प्राप्त करेंगे।

आजन्म अध्ययन को अपनी सहचरी बनाने वाले, छोटी कद–काठी के दुबले पतले किंतु निर्भीकता एवं ओजस्विता के गुणों से पूर्ण भारतीय स्वतंत्रता क्रांति के अग्रदूत, हिंदी पत्रकारिता के शिखर पुरुष, अपने संपादकत्व से हिंदी गद्य को नई दिशा देने वाले, साहित्य को समाज के लिए उपयोगी बनाने वाले, युग पुरुष गणेश शंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर सन 1890 दिन रविवार को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज के अतरसुइया में हुआ था। अतरसुइया गणेश शंकर विद्यार्थी का ननिहाल था। उनके पिता का नाम मुंशी जय नारायण श्रीवास्तव एवं माता का नाम श्रीमती गोमती देवी था। गणेश शंकर विद्यार्थी के पिता उस समय ग्वालियर रियासत के मुंगावली के एक स्कूल में अध्यापन करते थे। विद्यार्थी जी की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा वही हुई।

''विद्यार्थी जी'' का जन्म क्वार सुदी 14 रविवार सं 1947 वि0 (26 अक्टूबर सन् 1890) को अतरसुइया इलाहाबाद में उनके ननिहाल में हुआ था। इनकी माता गोमती देवी धार्मिक विचारों की महिला थी। कहते हैं विद्यार्थी जी का जन्म परिवार के लिये अत्यन्त मंगलाकारी सिद्ध हुआ। विद्यार्थी जी के जन्म के साथ उनके पिता को वेतन वृद्धि के कारण पूरे परिवार में खुशी का वातावरण छा गया। इनके पिता उस समय ग्वालियर रियासत के मुंगावली नामक स्थान में अध्यापक थे। यहीं प्रारम्भिक शिक्षा की शुरूवात हुयी, और यहीं मिडिल की परीक्षा पास की।[1]

''विद्यार्थी जी'' मिडिल परीक्षा पास करने के बाद अपने अग्रज शिव व्रत नारायण के पास कानपुर आ गए। इसके बाद उन्होंने कानपुर को ही अपनी कर्मभूमि बना लिया। ग्वालियर से आने के बाद उन्होंने कानपुर में करेन्सी ऑफिस में नौकरी प्रारंभ की किंतु अपने अक्खड़ एवं उग्र स्वभाव के कारण अधिक दिनों तक वहां टिक ना सके।

''06 फरवरी 1908 को विद्यार्थी करेन्सी दफ्तर में रुपए 30 प्रतिमाह पर क्लर्क नियुक्त हो गए। करेन्सी में एक बार उनको रद्दी नोट जलाने का हुक्म हुआ। भट्ठी में रद्दी नोट जलाने के प्रबन्ध करके आप वहीं बैठकर किताब पढ़ने लगे। इस अवसर पर सुपरिंटेंडेंट साहब आ गए। विद्यार्थी जी को किताब पढ़ते देखकर साहब नाराज हुए और उनसे कहा सुनी हो गई। इस पर उन्होंने 26 नवंबर 1906 को त्याग पर दे दिया''।[2]

इसके उपरांत गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर के पृथ्वी नाथ हाई स्कूल में अध्यापन करने लगे। ''कर्मयोगी'' समाचार पत्र को पढ़ने से रोके जाने के प्रतिरोध स्वरुप जल्द ही वहां से त्यागपत्र देकर नौकरी के दायित्व से मुक्त हो गये।

हिंदी पत्रकारिता से गणेश शंकर विद्यार्थी का जुड़ाव प्रारंभ से ही था। पहले ''स्वराज्य'' जो की उर्दू पत्रिका थी, उसमें उर्दू में लिखते थे। किंतु कर्मवीर सुंदरलाल जी से प्रेरित होकर हिंदी में लिखने लगे।

''जब आप इलाहाबाद में पढ़ते थे आप शांति नारायण के अखबार ''स्वराज्य'' में उर्दू में लिखा करते थे। यहां पर आपसे कर्मवीर सुंदरलाल की भेंट हुई और उनके आग्रह से आगे वे हिंदी में लिखने लगे''।[3]

सन् 1911 से विद्यार्थी जी ''कर्मयोगी'' और फिर बाद में ''अभ्युदय'' के लिए लेख लिखने लगे थे। दिसंबर 1911 में जब ''जॉर्ज पंचम'' भारत आया तो उसके ''दिल्ली दरबार'' की प्रथा के विरुद्ध बड़ौदा नरेश ने आचरण कर दिया। विरुद्ध आचरण क्या? गुलामी के विरुद्ध एक प्रयास था।

दिल्ली दरबार की एक प्रथा थी, जिसमें जॉर्ज पंचम को झुक कर सम्मान देने के बाद बिना पीठ दिखाएं वापस जाना होता था। किंतु बड़ौदा नरेश ने केवल झुक कर सम्मान किया।

''ग्यातव्य है, दिल्ली दरबार में वायसराय को सिर झुकाकर सलाम बजाकर उल्टे पैरों बिना पीठ दिखाएं अपने स्थान पर लौटना पड़ता था। बड़ौदा नरेश संभाजी राव गायकवाड़ को यह परिपाटी आत्म सम्मान के विरुद्ध प्रतीत हुई, उन्होंने वायसराय को मात्र सामान्य सिश्ट सलामी दी। उसके लिए वह अंग्रेज सरकार के कोपाजन के साथ देशी नरेशों की आलोचना के भी पात्र बने''। 4

लगभग सभी चाटुकार अखबारों ने बड़ौदा नरेश की आलोचना की, किंतु प्रतापी गणेश शंकर ने ''हितवादी'' अखबार में बड़ौदा नरेश के आचरण को आत्म सम्मान पूर्ण सिद्ध कर एक लेख लिखा। यही से उनके क्रांति का जो उद्घोष हुआ वह अंत तक रोके ना रूका।

''अंग्रेजी अखबारों ने बड़ौदा नरेश की बड़ी आलोचना की विद्यार्थी जी ने ''हितवादी'' अखबार में एक बड़ा विद्वता पूर्ण और ओजस्वी लेख लिखा, जिसमें बड़ौदा नरेश के आत्माभिमान पूर्ण आचरण का समर्थन किया गया था। हिंदी पत्र में इस प्रकार समयानुकूल लेख निकालना नयी बात थी। इसको पढ़कर सभी पत्रकार व पाठक आश्चर्य चकित हो गए। इस लेख से विद्यार्थी जी की बड़ी ख्याति हुई और उनके जीवन का एक नया रास्ता खुल गया।[5]

क्रांति की बड़वाग्नि का बीज हृदय में लिए गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी खड़ी बोली के उत्थानकर्ता महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के संपादकत्व में प्रकाशित ''सरस्वती पत्रिका'' में बतौर उप संपादक 02 नवम्बर 1911 से कार्य करने लगे। जहां उन्होंने शेखचिल्ली की कहानियों का अंग्रेजों से हिंदी अनुवाद किया।

02 नवम्बर 1911 से रूपया 25 माहवार पर वे ''सरस्वती'' के संपादन के कार्य में सहायता करने लगे। उनके परिश्रम और ज्ञानार्जन की लगन ने द्विवेदी जी को मुग्ध कर लिया। जब विद्यार्थी जी ''सरस्वती'' में काम करते थे तब उन्होंने शेखचिल्ली की कहानियों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद किया वह उनकी हिंदी की पहली पुस्तक थी इसके कई संस्करण निकल चुके हैं लेकिन इंडियन प्रेस वालों ने उनका नाम उस पुस्तक पर आज तक नहीं दिया।[6]

अपने क्रांतिकारी विचारों को ज्यादा समय तक वह अपने भीतर दबा नहीं सके। क्रांति के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि को खोजते हुए 29 दिसंबर 1912 से ''अभ्युदय पत्रिका'' में संपादन का कार्य करने लगे, गणेश शंकर विद्यार्थी की रुचि राजनीति में थी उस समय में राजनीतिक सुधारक क्रांति की आवश्यकता थी, विष्व में उपनिवेशवाद का साम्राज्य था, उसके आतंक एवं अन्यायपूर्ण शासन प्रणाली के विरुद्ध कई देशों के युवकों ने सार्थक संघर्ष कर अपने को स्वतंत्र करा लिया था, उन देशों की क्रांति के साहित्य को पढ़ने तथा उनका क्रियान्वयन करने का साहस विद्यार्थी जी ने आरंभ कर दिया था। विक्टर ह्यूगो पर तो गणेश जी का विशेष प्रेम था उनके ''लामजरेबिल'' का हिन्दी अनुवाद ''आहुति'' नाम से किया था।

विक्टर ह्यूगो के नाइट्रीथ्री उपन्यास का हिन्दी अनुवाद ''बलिदान'' नाम से कर भारतीय साहित्य को नवयुवकों के प्रेरणार्थ रख दिया, जिसने भारतीय नवयुवकों के मन में क्रांति का प्रादुर्भाव किया। उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का आरंभ कानपुर की पावन पौराणिक धरा से महाराणा प्रताप के शौर्य के समान ना झुकने, ना डिगने वाले हिंदी अखबार ''प्रताप'' के प्रकाशन से प्रारंभ होता है।

****गणेश जी संपादक हुए और देवोत्थानी एकादशी 9 नवंबर सन 1913 में ''प्रताप'' का प्रथम अंक प्रकाशित हुआ। 7*

1857 की क्रांति के बाद भारत वर्ष में सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन तेजी के साथ हुए, विश्व में उपनिवेशवाद के क्रूर शासन प्रणाली का विरोध हो रहा था तो भारत में भी उसका प्रभाव देखने को मिल रहा था। हिंदी साहित्य के लिए भी यह संक्रमण काल ही था, हिंदी साहित्य में नवाचार के बीज प्रस्फुटित हो चुके थे अंग्रेजों व देसी अन्यायी तालुकेदारों की दमनकारी जुगलबंदी भारतीय आम जनमानस के हृदय भावों पर इतना भारी थी, कि उनमें अन्याय का विरोध करने का सामर्थ्य ही जन्म नहीं लेता था। इन अत्याचारों के विरुद्ध लड़ने एवं नव चेतना का मंत्र फूंकने के लिए गलत को गलत एवं सही को सही कहने के लिए धन–मान और भय से रहित हो सामान्य गरीब मजदूर वर्ग के हक के लिए डटकर मुकाबला करने हेतु गणेश शंकर विद्यार्थी अपने प्रतापी पत्र ''प्रताप'' के साथ खड़े मिलते थे। उनके हिंदी अखबार ''प्रताप'' का उद्देश्य निश्चित था, क्योंकि बिना उद्देश्यों को लक्षित करके कोई कार्य अपनी लब्धि को नहीं प्राप्त हो सकता है। प्रताप के प्रथम अंक में उद्देश्यों की उद्घोशणा करते हुए संपादकीय लेख में विद्यार्थी जी ने कहा था–

''आज अपने हृदय में नई–नई आशाओं को धारण करके और अपने उद्देश्यों पर पूरा विश्वास रखकर प्रताप कर्म क्षेत्र में आता है। समस्त मानव जाति का कल्याण हमारा परमोद्देश्य है''। 8

उनके पत्र ''प्रताप'' ने सही अर्थों में अपने उद्देश्यों को प्राप्त किया, अपनी बनाई नीति से ''प्रताप'' व उसका प्रतापी संपादक ना डिगा ना डरा। संपादक का जेल जाना, जमानत हेतु धनराशि जमा करना, मसलन आए दिन होता था किंतु वह अपने निडर स्वभाव क्रांतिकारी विचारों और अक्खड़पन से टसमस ना हुआ। विद्यार्थी जी की लड़ाई का क्षेत्र सीमित नहीं था, वह जहां अन्याय होता था, गणेश शंकर विद्यार्थी अपने को वहां उपस्थित कर देते थे।

मैं लड़ाई का पक्षपाती हूं, समस्त सत्ताओं का विरोधी, चाहे वह सत्ता पूंजीपतियों की हो, ऊंची जाति वालों की हो अथवा अंग्रेजी साम्राज्य की।[9]

विद्यार्थी जी के कलम की उष्णता को देख आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने कहा था –

उनकी उग्र लेखनी देखकर मैं कभी–कभी कांप उठता था। और उन्हें सौम्य बनने की शिक्षा देता था, उत्तर में वे सदैव ही मुस्कुरा देते थे।[10]

हिंदी साहित्य को भी गणेश शंकर जी ने बहुत योगदान दिया। प्रताप में संपादकीय लेख लिखे। अपनी जेल की यात्रा का वृतांत लिखा। ''काकोरी के शहीद'' पुस्तक का प्रकाशन किया, मुंशी प्रेमचंद के उपन्यासों को ''प्रताप'' में प्रकाशित किया एवं बालकृष्ण शर्मा, नवीन सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि के कृतित्व के दिशा निर्देशन का कार्य कर उन्हें स्वराज्य क्रांति से ओतप्रोत कर हिंदी गद्य के परिवर्द्धन का कार्य किया।

''इतना ही क्यों साहित्य और राजनीति दोनों के क्षेत्र में यदि इन वरदानी हाथों ने स्पर्श शक्ति न दी होती तो बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री कृष्ण दत्त पालीवाल, विष्णु दत्त जी शुक्ला, सतगुरु शरण अवस्थी, डॉक्टर रामकुमार वर्मा जैसे लेखकों का आलोक इतना ही तीव्र होता, कौन जाने पंडित माखनलाल चतुर्वेदी, श्री हरि भाऊ उपाध्याय, मुंशी अजमेरी, वृंदावन लाल वर्मा और राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के व्यक्तित्व निर्माण में इस व्यक्ति ने किसी न किसी प्रकार प्रेरणा सहायता या शक्ति दी, इसे अस्वीकार करना कठिन है। प्रेमचंद जी की आरंभिक रचनाओं को ''प्रताप'' में छाप कर उन्हें सामने लाना हिंदी साहित्य की एक ऐतिहासिक घटना है''। 11

उस समय देशी राजाओं का अन्याय भी कम न था रायबरेली में एक घटना जिसमें कई किसानों की शहादत हुई थी। जिसमें रायबरेली के तालुकेदार वीर सिंह ने निहत्थे प्रदर्शनकारी किसानों पर गोली चला दी थी, उसके सरपरस्ती में अंग्रेजी सेना भी अंधाधुंध गोली चलाना शुरु कर दिया था।

' 'अरे शिव बालक तू तो नेता बन गया'', वीरपाल सिंह ने ललकारा ''राजा साहब ''अब हम लगान नहीं देंगे'', शिव बालक का उत्तर सुनकर वह क्रोध में आ गए और उस पर फायर कर दिया, शिव बालक के प्राण पखेरू उड़ गए, सेना ने इसे फायर का संकेत समझा और अंधाधुंध गोलियां चलने लगी''।[12]

इस गोली कांड को लगभग सभी समाचार पत्रों द्वारा कवर किया गया, ''प्रताप'' में भी इस गोली कांड की भर्त्सना करते हुए गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने इसे दूसरा ''जलियांवाला बाग'' कहा। राजा वीर सिंह के सम्मान को ठेस पहुंची उसके कुकृत्य की अमानवीय तस्वीर को विद्यार्थी जी ने समाज के समक्ष नग्न कर दिया था। राजा वीर सिंह ने सभी संपादकों को तुरंत माफी नामा प्रकाशित कर अपने से माफी मांगने को कहा था। सभी संपादकों ने माफी मांग कर अपना पिंड छुड़ा लिया, अड़ा रहा तो केवल अक्खड़ ''प्रताप'' जिसने अंत तक राजा वीर सिंह से माफी नहीं मांगी। राजा वीरपाल सिंह की नोटिस के जवाब में प्रताप के संपादक का उत्तर –

''प्रताप'' ऑफिस कानपुर
दिनांक 20 जनवरी 1921

सरदार वीरपाल सिंह एम0एल0सी0
तालुकेदार रायबरेली।
सर,

हमको आपकी नोटिस प्राप्त हुई। आपने यह पूछा है कि हम आपसे क्षमा याचना करें तथा जो हमने संपादकीय दिनांक 13 जनवरी 1921 में विचार प्रकट किए हैं, उन्हें वापस ले लें उसके उत्तर में हम आपको सूचित कर रहे हैं कि जो कुछ हमने लिखा है, हम पूरी तौर से न्याय पथ पर हैं। हमारे पास अपने विचारों की पुष्टि में पर्याप्त साक्ष्य हैं। हम आपसे फिर कहेंगे कि आप हमारे संपादकीय को, जिसका कि आपने उल्लेख किया है, दोबारा फिर पढ़े। हम पूरी सामग्री आपके वकील के हाथ में–यदि समय आया तो न्यायालय में दे देंगे। इसे दूसरी नीति न समझियेगा। अभियोगों के संबंध में सच्चाई यह होगी की जनता हमारा अखबार लेकर आपके दरवाजे पर चिल्लाएगी। मैं समझता हूं कि इंडिपेंडेंट अखबार के पास समय रहते पर्याप्त तथ्य नहीं पहुंच पाए, जिससे उन्होंने माफी मांग ली है।

आपका सच्चा
गणेश शंकर विद्यार्थी
संपादक प्रताप 13

अपनी पत्रकारिता एवं कलम के उद्देश्यों को उद्घाटित करते हुए उन्होंने जो दृढ़ संकल्प लिया था, उसे पूरी ईमानदारी के साथ निभाया यहां उनके प्रथम संपादकीय 9 नवंबर 1913 का लेख दृष्टव्य है–

''लेकिन जिस दिन हमारी आत्मा इतनी निर्बल हो जाए कि हम अपने प्यारे आदर्श से डिग जायें, जानबूझकर असत्य के पक्षपाती बनने की बेशर्मी करें और उदारता, स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता को छोड़ देने की भीरूता दिखावें, वह हमारे जीवन का सबसे अभागा दिन होगा और हम चाहते हैं कि हमारी उस नैतिक मृत्यु के साथ ही साथ हमारे जीवन का भी अंत हो जाए''। 14

गणेश शंकर विद्यार्थी की कलम सूर्य के तेज की भांति दग्ध होती जा रही थी वही समाज में युवा वर्ग भी क्रांति का उद्घोष कर पहली पीढ़ी की नीतियों को उखाड़ फेंकना चाहता था। विद्यार्थी जी ने दोनों धाराओं में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से ही 01 दिसंबर 1929 को ''युवकों का विद्रोह'' शीर्षक लेख लिखा।

''आज नए और पुराने में कहीं–कहीं संघर्ष में नये समझते हैं कि बूढ़े खूसट न मरते हैं और न माचा छोड़ते हैं, और पुराने समझते हैं कि महत्वाकांक्षा से नयों का सिर फिर गया है। दोनों ओर भ्रम है। देश के कल्याण के लिए उसे दूर होना चाहिए। युवक ही क्या यदि उसमें उत्साह और ओज न हो। युवकत्व का सबसे बड़ा प्रमाण ही यह है कि भावनाओं का वह पुंज हो और अखिल उत्साह का स्रोत। उसके (युवक के) उदय से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। उसका तो हृदय से स्वागत होना चाहिए। हिंसा और अहिंसा की विवेचना छोड़ दीजिए। विज्ञान ने वर्तमान रणशैली को बेहद भयंकर बना दिया है। उसमें वीरता नहीं रहती। उसमें शत्रुता और हत्या का राज्य है। और, उसके मुकाबले में हमारे ऐसे शताब्दियों से निरस्त लोगों खड़ा रह सकना असंभव है।''[15]

इस प्रकार विद्यार्थी जी ने अपनी लेखनी से समाज में समन्वय कर क्रांति को सार्थक स्वरूप प्रदान करने के साथ–साथ हिंदी साहित्य के उत्थान में अविस्मरणीय योगदान प्रदान किया, उनके उस योगदान को वर्णित करते हुए सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने ''मतवाला'' में संपादकीय में लिखा था।

' 'गणेश शंकर विद्यार्थी का व्यक्तित्व चुंबकीय था। उन्होंने हिंदी साहित्य की बहुत वृद्धि की। वह इन्हीं के साहस का फल था कि देशी राज्यों की प्रजा ने अपने उत्थान के लिए आवाज उठाना प्रारंभ किया।''[16]

गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्थगित किये जाने के बाद सभी बंदियों को जेल से रिहा किया जाने लगा। गणेश शंकर विद्यार्थी को भी हरदोई जेल से 10 मार्च 1931 ई0 को रिहा कर दिया गया। वह उनकी 5वीं किन्तु अंतिम जेल रिहाई थी। सन् 1931 में घटना रही घटनाओं जिसमें फरवरी में आजाद चन्द्रशेखर जी का अमर आत्म बलिदान, अगले माह में तय समय से पहले शहीद–ए–आजम भगत सिंह को फांसी व उनका अंतिम संस्कार, जिसने देश में अंग्रेजों की क्रूरता की पराकाष्ठा को परिलक्षित कर दिया था। भगत सिंह की फांसी के विरोध में देशव्यापी हड़ताड़ घोषित की गयी। कानपुर शहर में भी कांग्रेसी कमेटी ने हड़ताल का आवाहन किया। हिन्दू दुकानदारों ने स्वेच्छा से अपनी–अपनी दुकानें बंद कर ली। किन्तु मुस्लिम वर्ग के कुछ लोग हड़ताल में सम्मिलित नहीं होना चाहते थे, और यह करके वो अंग्रेजों के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्षित करने का निंदनीय प्रयत्न कर रहे थे। हड़ताल को सफल बनाने हेतु हड़तालीजनों द्वारा जोर–जबरजस्ती करने पर स्थिति ने भयावय रूप धारण कर लिया। पूरा षहर दंगे की दवाग्नि से दग्ध हो उठा। गणेश शंकर विद्यार्थी को कांग्रेस अधिवेशन हेतु कराची जाना था। किंतु शहर की स्थिति देखकर कानपुर में रुक गए और धार्मिक उन्मत्त लोगों को षांत करने का प्रयत्न करने लगे परंतु जिन्हें ''भगत'', ''आजाद'' से प्रेम न था' वह ''गणेष'' से कैसे प्रेम करते। चौबे गोला के पास 25 मार्च 1931 को आतातायियों द्वारा उनका निर्ममता पूर्ण वध कर दिया गया। भारतीय क्रांति का उन्नायक कानपुर की आन बान षान, इस नश्वर शरीर को छोड़कर परमधाम को चला गया। उनका वह परम बलिदान श्रद्धा करने योग्य है।

संदर्भः–

पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक	प्रकाशक
1. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 136–137	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
2. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 149–150	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
3. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 149	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
4. युगपुरूष गणेशशंकर विद्यार्थी 91	श्री तिलक	प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
5. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 150	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
6. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 151	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
7. युगपुरूष गणेशशंकर विद्यार्थी 09	श्री तिलक	प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
8. युगपुरूष गणेशशंकर विद्यार्थी 391	श्री तिलक	प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
9. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 7	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
10. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 59	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
11. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 74	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
12. निर्भीक राष्ट्र नायक गणेशशंकर विद्यार्थी 144	सं0 विद्याप्रकाश	अनुराग प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
13. युगपुरूष गणेशशंकर विद्यार्थी 494	श्री तिलक	प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2024 संस्करण
14. मानवीय एकता की अमर प्रेरणा गणेशशंकर विद्यार्थी (18)	कुमार दिनेशप्रियमन	सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 2019 संस्करण
15. मानवीय एकता की अमर प्रेरणा गणेशशंकर विद्यार्थी (28)	कुमार दिनेशप्रियमन	सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 2019 संस्करण
16. मानवीय एकता की अमर प्रेरणा गणेशशंकर विद्यार्थी (37)	कुमार दिनेशप्रियमन	सर्वसेवा संघ प्रकाशन वाराणसी 2019 संस्करण